



Vol.5

अयोध्या के शूरवीर

मृत्यु घटनाओं पर आधारित



HEMANT
ISHAN

शौर्य चक्र



वरीयता क्रम में कीर्ति चक्र के बाद आने वाला शौर्य चक्र वीरता का पदक है। यह सम्मान शांति काल में आतंकवाद विरोधी संचालन और दुश्मन के खिलाफ कार्यवाही के लिए देश के सिपाहियों अथवा गैर सिपाहियों को उनके द्वारा प्रदर्शित अदम्य साहस वीरता व अपने प्राणों तक को न्यौछावर करने के जज्बे के लिए प्रदान किया जाता है। शांतिकाल में यह पदक वीर चक्र के बराबर माना जाता है। इस पदक के साथ मासिक-भत्ता भी प्रदान किया जाता है जो कार्मिक की सेवानिवृत्ति के बाद भी जारी रहता है तथा कार्मिक की मृत्युपरांत उसके आश्रित को भी दिया जाता है। लगातार दूसरी बार यह पदक बार-एक और इसी क्रम में पुलिस पदक बार-दो और आगे इसी क्रमिक रूप से जारी रहता है।

वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक



वरीयता क्रम में शौर्य चक्र के बाद आने वाला वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक देश की आंतरिक सुरक्षा, देश हित और देश की रक्षा के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर देने वाले वीर पुलिस कर्मियों को प्रदान किया जाता है। इस पदक के साथ एक मासिक-भत्ता भी प्रदान किया जाता है जो कार्मिक की सेवानिवृत्ति के बाद भी जारी रहता है तथा कार्मिक के मृत्युपरांत उसके आश्रित को भी दिया जाता है। लगातार दूसरी बार यह पदक बार-एक और इसी क्रम में पुलिस पदक बार-दो और आगे इसी क्रमिक रूप से जारी रहता है।

वीरता का पुलिस पदक



वरीयता क्रम में वीरता के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक के बाद आने वाला वीरता का पुलिस पदक देश की आंतरिक सुरक्षा, देश हित और देश की रक्षा के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर देने वाले वीर पुलिस कर्मियों को प्रदान किया जाता है। इस पदक के साथ एक मासिक-भत्ता भी प्रदान किया जाता है जो कार्मिक की सेवानिवृत्ति के बाद भी जारी रहता है तथा कार्मिक की मृत्युपरांत उसके आश्रित को भी दिया जाता है। लगातार दूसरी बार यह पदक बार-एक और इसी क्रम में पुलिस पदक बार-दो और आगे इसी क्रमिक रूप से जारी रहता है।



अयोध्या के शूरवीर



प्रस्तुति: संजय गुप्ता
लेखन: नितिन मिश्रा
चित्रांकन: हेमंत कुमार
स्याहीकार: विनोद कुमार
आवरण: हेमंत कुमार एवं ईशान त्रिवेदी
रंग सज्जा: सुनील दस्तुरिया
शब्दांकन: मंदार गंगेले
संपादन: मनीष गुप्ता

Published By: Raj Comics (an imprint of Raja Pocket Books) on behalf of Directorate General C.R.P.F.

Raj Comics

330/1, Burari

Delhi-110084

www.rajcomics.com

Copyright © 2016 Central Reserve Police Force

Printed By: Prince Print Process

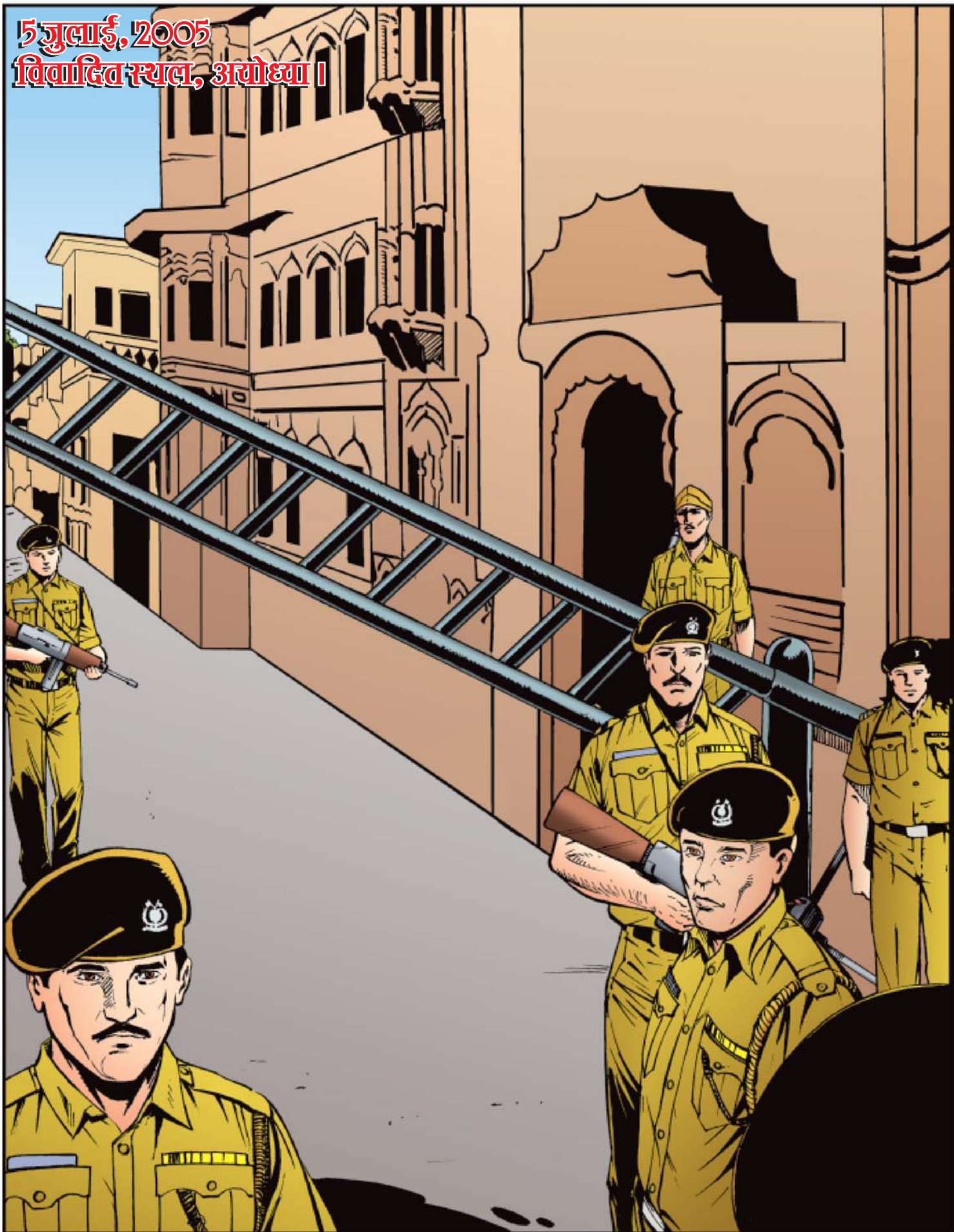
All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed or transmitted in any form or by any means, including photocopy, recording or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the publisher- For permission requests write to the publisher addressed "Attention: Permissions Coordinator" at the address below.

Inspector General (Operations)

Central Reserve Police Force

Email: igops@crpf.gov.in

5 જુલાઈ, 2005
વિવાહિત સ્થળ, અયોધ્યા ।



प्रतिदिन की तरह उस दिन भी श्रद्धालुओं व दर्शनार्थियों की भीड़ में कोई कमी नहीं थी।



और ना ही कमी थी उन श्रद्धालुओं के उत्साह में, देशभर में आतंकी माहौल के चलते हुए भी किसी के चेहरे पर भय की एक लकीर व संशय का हल्का सा भाव भी नहीं था...

...क्योंकि वे जानते थे कि उनके रक्षक अपने कर्तव्य पर पूरी मुस्तैदी से तैनात हैं।



पापा! ये इतने सारे पुलिस वाले यहां क्यों तैनात हैं?

ये पुलिस वाले नहीं हैं बेटा, ये सेन्ट्रल रिजर्व पुलिस फोर्स के जवान हैं। और ये सभी हमारी हर खतरों से सुरक्षा करने के लिए तैनात और तत्पर हैं।

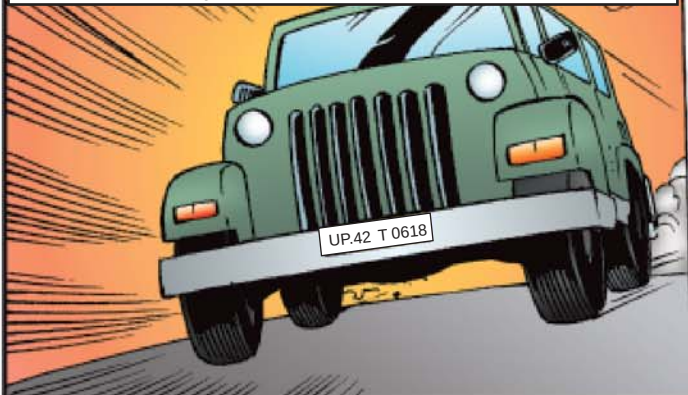
वे जानते थे कि देशहित और नागरिकों की सुरक्षा को अपना कर्तव्य ही नहीं अपना धर्म मानने वाले ये फर्ज के सिपाही जब तक तैनात हैं उन श्रद्धालुओं तक आतंक की कोई चिंगारी पहुंच नहीं सकती!



जब तक सेन्ट्रल रिजर्व पुलिस फोर्स के ये जवान देशवासियों की सुरक्षा के लिए फर्ज के फौलाद को वर्दी के रूप में अपने शरीर पर चढ़ाए, सीना ताने खड़े हैं तब तक आतंक की कोई आंच देश के आम नागरिकों को झुलसा नहीं सकती।



पर उस दिन जवानों के इस हौसले और देशवासियों के उन पर अटूट विश्वास को जैसे चुनौती देने के कुत्सित इरादे लिए हुए वह जीप सड़क को बेरहमी से रेंदती हुई कैम्पस की बाहरी छावनी की ओर बढ़ रही थी।



बेरहमी सिर्फ उस जीप की रफ्तार में ही नहीं थी, बल्कि उस जीप के हर एक सवार की आंखों से टपक रही थी।



हौसला बुलंद कर लो साथियों और इरादे मजबूत।

देश और इंसानियत के दुश्मन वे फिदायीन, जिनके दिल-ओ-दिमाग में सिर्फ नफरत और आतंकवाद का बास्पा भर था। उस बास्पा से देश के अमन और सांप्रदायिक सौहार्द की धजियां उड़ाने का इरादा रखते थे वे।

आज आतंक का वह मंजर दिखाना है इन काफिरों को जो इनकी सोच से भी परे हो।

फिक्र ना करो! आज इम्तेहान की घड़ी है और सच्चा फिदायीन कभी भी आतंक के इम्तेहान में फेल नहीं होता।

उस इरादे को अमली जामा पहनाने की पुख्ता तैयारी की थी मौत के उन सौदागरों ने, जिन्हें ना अपनी मौत का खौफ था ना बेगुनाहों की मौत का अफसोस।

हमारी जन्नत का रास्ता मौत को अपना मुकद्दर बना कर ही खुलेगा साथियों, याद रखो सी.आर.पी.एफ. वाले हमें अपने मकसद को अंजाम देने के लिए ज्यादा समय नहीं देंगे। हमारा सिर्फ एक ही लक्ष्य होना चाहिए, विवादित स्थल की तबाही।

हिन्दुस्तान के धार्मिक सौहार्द को बिगाड़ने, हिन्दू-मुस्लिम भाईचारे और अमन चैन को नेस्तनाबूत करने का इससे बेहतर मौका नहीं मिलेगा। जितने ज्यादा से ज्यादा श्रद्धालुओं को ज़िबह कर सको कर दो, विवादित स्थल को नेस्तनाबूत कर दो।

हमारे आकाओं ने हमें इतने असला बास्पा के साथ भेजा है कि पूरी अयोध्या को जलता हुआ श्मशान बना दें। अपनी आखिरी सांस तक खून का एक-एक कतरा और बास्पा का एक-एक जर्जर झोंक देना साथियों।

फिक्र ना करें, भाईजान! अपने मकसद की राह में कुर्बानी देने से नहीं डरते हम!

सामने कैम्पस की बाहरी बैरिकेटिंग नजर आ रही है। वक्त आ गया है कि हम जीप छोड़ दें।

डाइविंग सीट पर बैठे फिदायीन को छोड़ कर बाकी सभी आतंकी सावधानीपूर्वक जीप से उतर गए।

अब इस मिशन का दारोमदार तुम पर है जाहिद! कैम्पस में घुसने और सी.आर.पी.एफ. वालों का ध्यान बंटाने में अगर तुम चूके तो हम सभी की रूहें भी ये सी.आर.पी.एफ. वाले कैम्पस में दाखिल ना होने देंगे।

आप फिक्र ना करें भाईजान! अब यह जीप सीधे जन्नत जाकर ही रुकेगी!





विजोतो ने रोती हुई बच्ची को चुप कराते हुए गोद में उठा लिया और उनकी पैनी नजर श्रद्धालुओं की भीड़ को रकैन करने लगी।



सी.आर.पी.एफ. के प्रशिक्षण और बाज सी पैनी नजर ने चंद पलों में ही अपना लक्ष्य तलाश लिया।



और बच्ची को उसके माता-पिता तक पहुंचा दिया।

बहुत-बहुत धन्यवाद साहब, आपने हमारी बच्ची को हमसे मिला दिया।

भीड़ की धक्का-मुक्की में ना जाने कब यह हमसे बिछुड़ गई।

भीड़ भरी जगहों पर बच्चों के बिछुड़ जाने या भीड़ में गिर कर घायल होने की संभावनाएं बहुत ज्यादा होती हैं। भीड़ भरी जगहों पर बच्चों का हाथ पकड़ कर उन्हें साथ लेकर चलने के बजाए उन्हें अपनी गोद में लेकर चलना चाहिए।



दूसरी बात, अपने बच्चों को छोटी उम्र से ही माता-पिता का नाम और घर का पता सिखाएं ताकि अगर बच्चे दुर्घटनावश अपने परिवार से बिछुड़ जाएं तो उनके अभिभावकों को ढूंढने में सहायित हो।

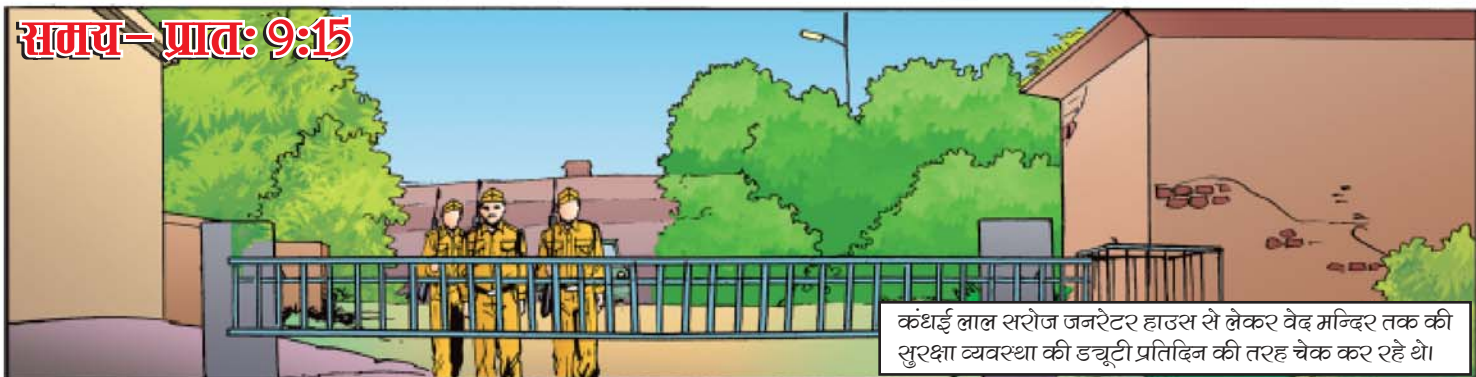
कोशिश करिए कि अपने छोटे बच्चों के कपड़ों की पॉकेट में माता-पिता का नाम, घर का पता और फोन नम्बर लिख कर रख दें ताकि अगर बच्चा बिछुड़ जाए तो उसे जल्द से जल्द उसके अभिभावकों तक पहुंचाया जा सके।

आपने बहुत पते की बात बताई साहब! हम जरूर इसका ध्यान रखेंगे। बहुत-बहुत धन्यवाद।



कमाल कर दिया सर आपने, अमूमन अगर कोई बच्चा यहां बिछुड़ जाता है तो हम उसे अपने पास बिठा लेते हैं ताकि जब उसके अभिभावक उसे ढूंढते हुए यहां पहुंचें तो हम बच्चे को उनके सुपुर्द कर दें। पर आपने तो आधे मिनट से भी कम समय में अभिभावकों को ही ढूंढ निकाला, कैसे किया यह आपने?

अपने लक्ष्य पर निशाना साध कर, धरमबीर!





जैसे ही उनकी आंखें कुछ देखने के काबिल हुईं, एक खौफनाक मंजर कंधई लाल और उनकी टीम के सम्मुख प्रस्तुत हुआ।

ओ माई गॉड!!



पांच सशस्त्र फिदायीन आतंकी अपने हथियारों से आतंक की आग उगलते हुए परिसर की बाहरी सीमा लांघ रहे थे।

पूरा परिसर सुरक्षा की दृष्टि से तीन हिस्सों में बांटा गया था, परिसर का सबसे बाहरी हिस्सा येलो जोन था जहां आतंकी ने जीप ब्लास्ट की थी।

अब आतंकी परिसर के ग्रीन जोन में प्रवेश कर रहे थे जहां की सुरक्षा सिविल पुलिस करती है।

परिसर का सबसे भीतरी हिस्सा यानि विवादित स्थल का क्षेत्र जोकि रेड जोन है वहां की सुरक्षा का दायित्व सी.आर.पी.उफ. पर है और आतंकियों का मकसद इस रेड जोन को भेदना था।

कंधई लाल और उनकी पुलिस टीम फौरन हरकत में आई।

सुरक्षित आड लेकर सिविल पुलिस ने आतंकियों की फायरिंग के जवाब में जवाबी फायरिंग शुरू की।

आगे बढ़ो साथियों, जेहाद ही जन्नत की राह है। खुद को कुर्बान कर दो, लेकिन कुर्बान होने से पहले आतंक का ऐसा खौफनाक मंजर पेश करो कि काफिरों की आने वाली पुश्तों की रूहें भी याद करके कांप उठें।



खबरदार!! अपने हथियार फेंक दो और आत्मसमर्पण कर दो, यह हमारी पहली और आखिरी चेतावनी है।



अयोध्या में हुए इन धमाकों की गूंज पूरे हिन्दुस्तान में गूंजनी चाहिए।

धमाके की गूंज और गोलियों की तड़तड़ाहट सी.आर.पी.उफ. की 135 वीं कंपनी की महिला असिस्टेंट कमाण्डेंट श्रीमती संतो देवी तक भी पहुंची जोकि प्रतिदिन की तरह ड्यूटी के लिए तैयार हो रही थीं। चूंकि दर्शन के दौरान महिला दर्शनार्थियों की सुरक्षा हेतु 135 महिला बटालियन, के.रि.पु. बल की एक प्लाटून परिसर में तैनात रहती है।



अरे! यह धमाका कैसा? धार्य-धार्य-धार्य-बूम-बूम-बूम!!



धमाकों की आवाज से श्री विजोतो टिनी और उनके जवान भी फौरन हरकत में आए।

ये धमाके कैसे? सावधान हो जाओ जवानों! लगता है आतंकी हमला हुआ है।

यस सर!



काबूम-बूझम-रेट-रेट-रेट

ये भीषण धमाके कैसे?

आतंकी हमला हुआ है क्या?

अब क्या होगा पापा? क्या आतंकवादी हमें मार देंगे?

हमें कुछ नहीं होगा बेटा!

...जब तक सी.आर.पी.उफ. है तब तक किसी भी निर्दोष नागरिक का बाल भी बांका नहीं होगा।



बम के धमाके और गोलियों की आवाज सुनकर महिला असिस्टेंट कमाण्डेंट श्रीमती संतो देवी मानस भवन से निकल कर आइसोलेशन एरिया की ओर बढ़ी।



कंधाई लाल ने मैसेज फ्लैश किया!

ऑल यूनिट्स पुल्ट!! स्वचालित शस्त्रों और भारी मात्रा में असलहों से लैस पांच आतंकी मुख्य परिसर की ओर बढ़ रहे हैं।

कंधाई लाल द्वारा पुष्टि किउ जाने के साथ ही विजोतो टिनी और उनके जवान जंग के लिए तैयार थे। आतंकी ग्रीन जोन से अब रेड जोन में प्रवेश करने की चेष्टा कर रहे थे।



सभी जवान अपना मोर्चा संभाल लें, एक ग्री आतंकी रेड जोन में प्रवेश नहीं करना चाहिए।

हरामजादे हिन्दुस्तानियों, खबीस की औलादों, सुअर के बच्चों, आज फना कर देंगे तुम्हें!!



तुम्हारे यह अपशब्द ही तुम्हारी परवरिश और संस्कार दिखाते हैं पाकिस्तानियों।

आज तुम्हारे यह अपशब्द ही तुम्हारी हार का कारण बनेंगे।

भारत माता के सच्चे सपूतों को ललकारा है तुमने, इस ललकार के बदले में सिर्फ मौत मिलेगी।

अपनी जान की लेशमात्र ग्री परवाह किउ बगैर ग्री विजोतो टिनी बिना बुलेटप्रूफ जैकेट और बिना किसी कवर के ओपन एरिया से ही आतंकियों को मुंहतोड़ जवाब देने लगे।



मर हिन्दुस्तानी सुअर!

एक-एक हिन्दुस्तानी जवान तुम्हारे जैसे सौ-सौ पाकिस्तानी आतंकवादियों को मार कर ही जाउगा। मरो पाकिस्तानियों!!





सर्वप्रथम संतो देवी ने वायरलेस पर सी.आर.पी.एफ. की सभी टुकड़ियों को अलर्ट भेजा।



ऑल यूनिट्स अलर्ट। विवादित स्थल पर आतंकी हमला हुआ है, हमें बैकअप चाहिए।

उसके बाद उन्होंने उठाया वह साहसिक और खतरनाक कदम जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी।



मुझे मोर्चा नम्बर एक तक पहुंचना होगा।

बहुत बड़ा जोखिम उठाया था श्रीमती संतो देवी ने, जैसे ही उन्होंने मानस भवन से मोर्चा नम्बर एक की ओर दौड़ लगाई वे आतंकियों के लिए ओपन टारगेट बन गईं।



उस महिला जवान को निशाना बनाओ साधियों।

बूम

अगले ही पल संतो देवी तीन आतंकियों के निशाने पर थीं, लेकिन अपनी जान की परवाह कहां थी संतो देवी को।



रेट-रेट-रेट-रेट

उनके दिल-ओ-दिमाग में बस एक ही धुन थी।



उन मासूमों को बचाना है मुझे।

सिपाही रामाश्रय, जसविंदर सिंह और राजेश कुमार ने फायरिंग करके संतो देवी को कवर दिया।



संतो देवी पर फायरिंग करते दोनों आतंकियों को संतो देवी को छोड़कर खुद की जान बचाने के लिए भाड़ लेनी पड़ी।

आतंकियों ने उनपर ग्रेनेड्स उछाल दिए।





पर संतो देवी के फर्ज की धुन के आगे आतंक का बारूद भी फीका पड़ गया। उनके जहेन में तो जैसे एक ही धुन गूँज रही थी "खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी।"



सीढ़ियों पर तेजी से बढ़ रही संतो देवी को अपनी गोलियों का निशाना बनाने की हर संभव कोशिश कर रहे थे आतंकी।



संतो देवी के इरादों का अंदेशा आतंकियों को भी हो गया था।



पर सी.आर.पी.एफ. की कड़ी ट्रेनिंग ने इस महिला के इरादों में फौलाद कूट-कूट कर भरा था।



संतो देवी अपने गंतव्य तक पहुंच चुकी थीं।



बौखलाए हुए आतंकियों ने संतो देवी को ललकारते हुए गोलियां दागीं और हथगोले फेंके।





मुस्तैदी से आतंकियों का सामना करते विजोतो और उनके जवान आतंकियों को रेड जोन के करीब नहीं आने दे रहे थे जिस वजह से आतंकियों द्वारा फेंके गए ग्रेनेड्स वहां उपस्थित लोगों तक नहीं पहुंच पाए।



लेकिन आतंकियों की गोलियां विवादित स्थल तक पहुंच रही थीं, संतो देवी की सूझ-बूझ ने लोगों को बचाए रखा।

अपने सिर और कंधे जमीन से चिपका कर रखो प्यारे बच्चों! ना ऊपर देखना और ना ही आवाज करना।

विजोतो और उनके जवानों की फायरिंग ने आतंकियों को गेट नम्बर 1 की ओर से भीतर नहीं आने दिया, मजबूरन आतंकियों को पीछे हटना पड़ा।



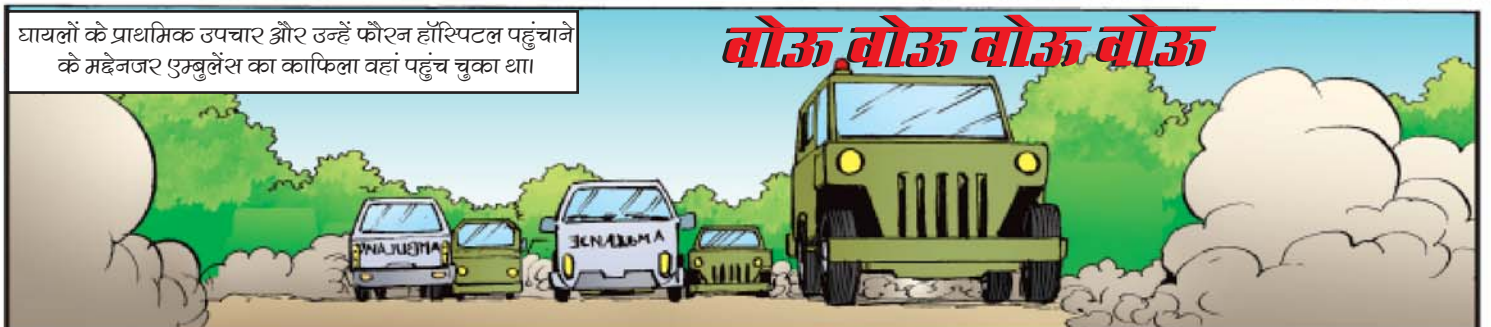
सी.आर.पी.एफ. के सभी जवानों की पहली प्राथमिकता सभी श्रद्धालुओं को सकुशल वहां से बाहर निकालना थी।



संतो जी! आप एक एक करके श्रद्धालुओं को पीछे गेट नम्बर-2 के रास्ते से बाहर निकालें!

जसविंदर, रामाश्रय, राजेश आप लोग सभी श्रद्धालुओं को बाहर निकालने में संतो जी की मदद करें। ओवर एंड आउट।

यस सर! ओवर एंड आउट!!



घायलों के प्राथमिक उपचार और उन्हें फौरन हॉस्पिटल पहुंचाने के मद्देनजर एम्बुलेंस का काफिला वहां पहुंच चुका था।

बोऊ बोऊ बोऊ बोऊ



आराम से, एक-एक करके निकलें। सिर झुका कर रखिए, कोई भी जल्दबाजी नहीं मचाएगा, आप सभी सुरक्षित हैं निश्चित रहिए।

संतो देवी वाकई में श्रद्धालुओं के लिए देवी का अवतार बनकर आई थीं।

उनके आने से श्रद्धालुओं को नई उम्मीद, नया हौसला मिला।

हिम्मत और इच्छाशक्ति का संचार कर दिया संतो देवी ने उनमें।

मोर्चा नम्बर 2 और मोर्चा नम्बर 2(A) पर भी आतंकियों और सी.आर.पी.एफ. के जांबाज जवानों के बीच घमासान गोलाबारी हो रही थी।



विजोतो टिनी और धरमबीर सिंह अपने फर्ज के आगे अपनी खुद की सलामती को कहीं भूल बैठे थे।

कुछ याद था फर्ज के उन मतवालों को तो सिर्फ अपनी ड्यूटी, अपनी कर्तव्यनिष्ठा और देश की अखंडता को अपनी अंतिम सांस तक बनाए रखने की उनकी शपथ।



उनके हथियारों से निकलते फौलाद में उनके देशप्रेम का जो जूनून था उसके सामने भला आतंकवाद का जहर कैसे टिकता।

विजोतो और उनकी टीम के सामने अचानक एक और समस्या विकराल रूप ले रही थी।



हमें बाहर से और असला व कारतूस मंगाना होगा।

सर मैं यह काम आसानी से कर सकती हूं, जिस रास्ते से हम श्रंखालुओं को निकाल रहे हैं, मैं उधर से असला आप तक पहुंचा सकती हूं।



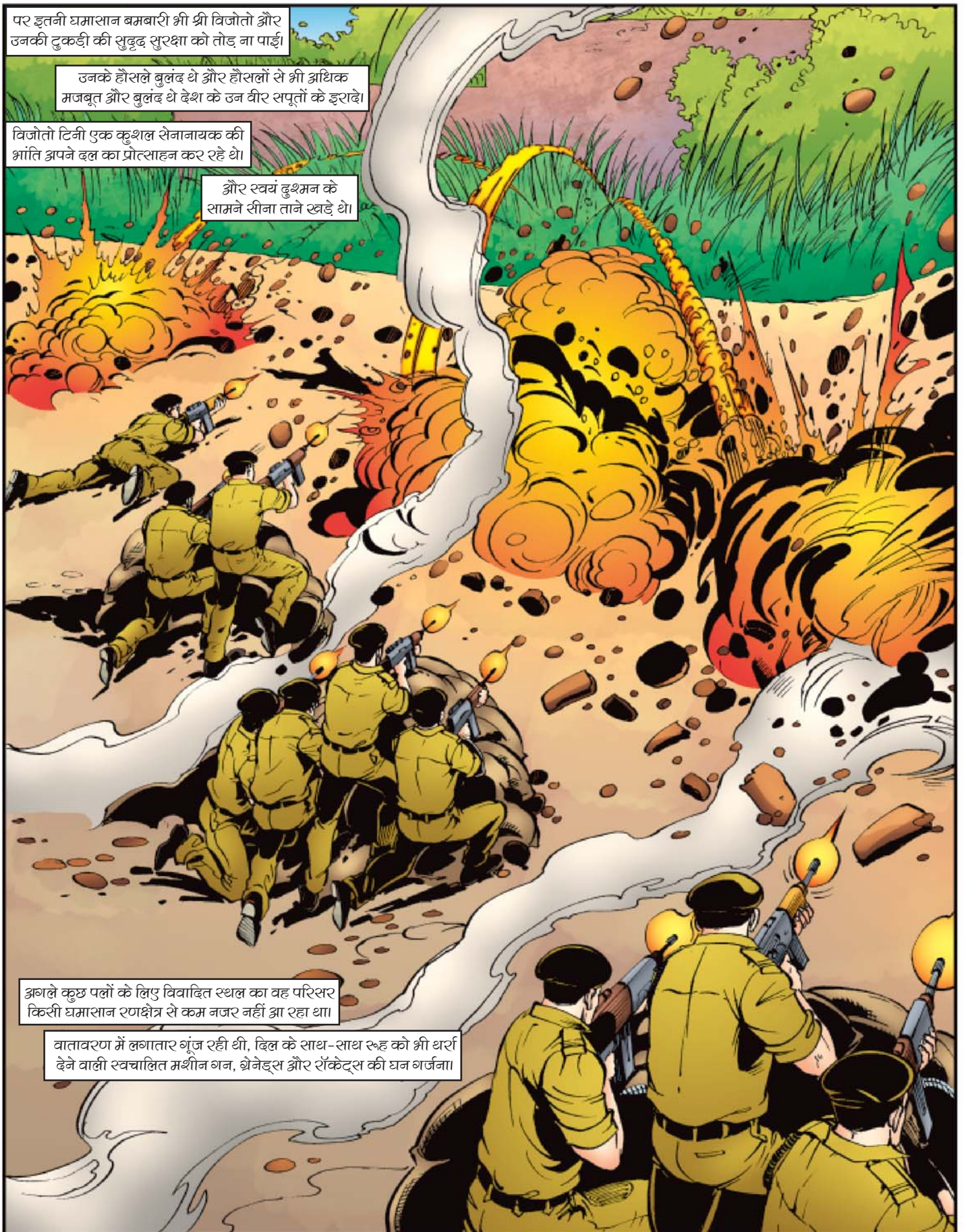


पर इतनी घमासान बमबारी भी श्री विजोतो और उनकी टुकड़ी की सुदृढ़ सुरक्षा को तोड़ ना पाई।

उनके हौसले बुलंद थे और हौसलों से भी अधिक मजबूत और बुलंद थे देश के उन वीर सपूतों के इरादे।

विजोतो टिनी एक कुशल सेनानायक की भांति अपने दल का प्रोत्साहन कर रहे थे।

और स्वयं दुश्मन के सामने सीना ताने खड़े थे।



अगले कुछ पलों के लिए विवादित स्थल का वह परिसर किसी घमासान रणक्षेत्र से कम नजर नहीं आ रहा था।

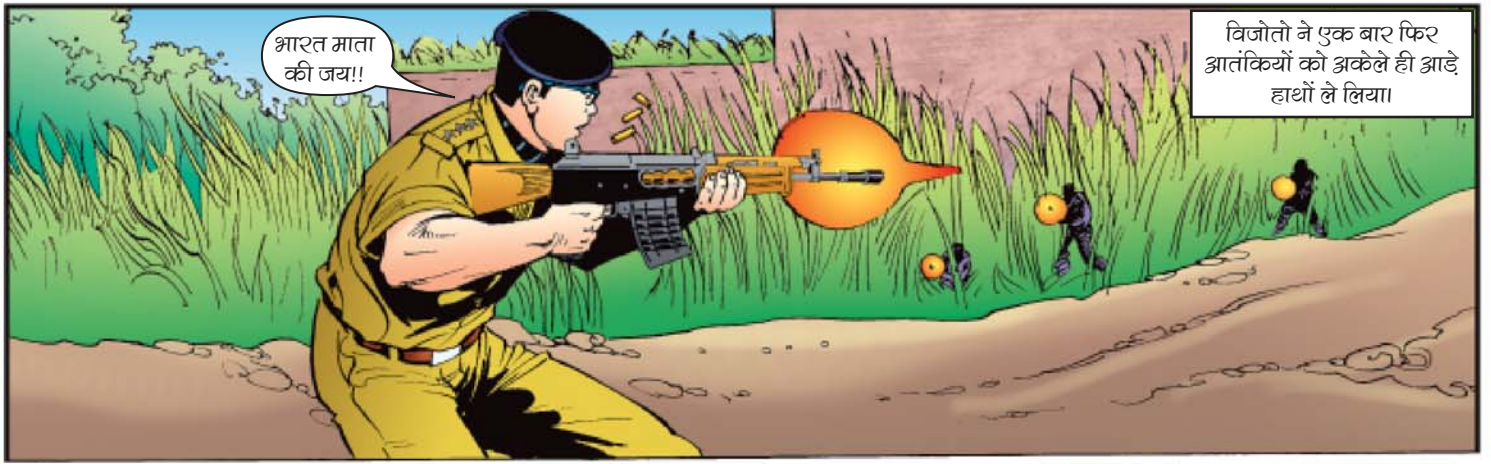
वातावरण में लगातार गूँज रही थी, दिल के साथ-साथ रूह को भी धर्र देने वाली स्वचालित मशीन गन, ग्रेनेड्स और रॉकेट्स की घन गर्जना।





मोर्चा नम्बर-2 में आतंकवादियों के ग्रेनेड ब्लास्ट से मोर्चे की सेण्डबैग की दीवार के कुछ हिस्से गिर गए थे। फिर भी इस मोर्चे में तैनात सिपाही ओमप्रकाश बहादुरी का परिचय देते हुए मोर्चे में टिका रहा व दिलेरी से आतंकवादियों का सामना करता रहा।





भारत माता
की जय!!

विजोतो ने एक बार फिर
आतंकियों को अकेले ही आड़े
हाथों ले लिया।



इस बीच संतो देवी सी.आर.पी.एफ. हेडक्वार्टर
में 33वीं बटालियन के द्वितीय कमान अधिकारी
श्री योगिन्दर सिंह से संपर्क स्थापित कर के
उन्हें पूरी स्थिति से अवगत करा चुकी थी।

व्हाट? ओ
माई गॉड।



आप लोग मोर्चे पर डटे रहिए, मैं
जल्द से जल्द विक्क रिएक्शन टीम
के साथ मौकाए वारदात पर पहुंच
रहा हूं। ओवर एंड आउट!!



कनपट्टियां सनसना रही थीं श्री योगिन्दर सिंह की।

विवादित स्थल पर
हमला यानि देश की साम्प्रदायिक
एकता पर चोट करने का मंसूबा
बनाया है आतंकवादियों ने। उफ! अगर
स्थिति जल्द नियंत्रण में ना आई तो
देश में सांप्रदायिक हिंसा और
कत्लेआम मच जाएगा।

अब सब कुछ विजोतो
टिनी और उनकी टीम पर
निर्भर करता है।



अपने जांबाजों को एकत्र किया उन्होंने।

दिस इज कोड रेड कमांडोज,
विवादित स्थल का आइसोलेशन जोन
आतंकियों के निशाने पर है। आतंकी
भारी मात्रा में हथियार और गोला
बारूद से लैस हैं।

विजोतो और
उनकी टीम उनका
मुकाबला कर रही है एंड
दे नीड बैकअप।

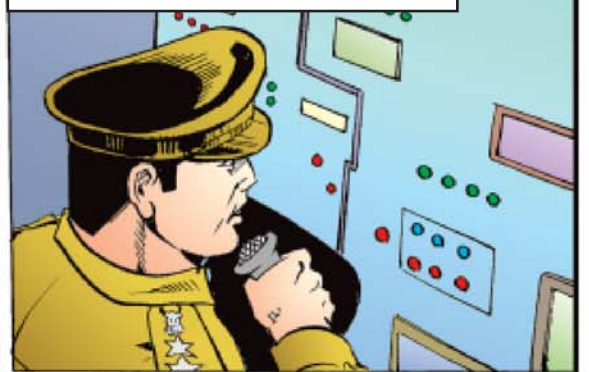
एंड फॉर बैकअप,
वी नीड ए फूलप्रूफ
प्लान!



बटालियन क्विक रिएक्शन टीम तूफान की रफ्तार से घटनास्थल की ओर बढ़ रही थी।



कंधाई लाल सिविल पुलिस एस.एस. पी. अविनाश चन्द्र को स्थिति से अवगत करा चुके थे।



एस.एस.पी. साहब एस.पी. सिटी और एस.पी. सिक्कोरिटी के साथ फोर्स लेकर घटनास्थल के लिए रवाना हो रहे थे।



पर हर गुजरता क्षण घायल जवानों के लिए मुश्किलें बढ़ाने वाला था।

उनकी और परिसर दोनों की रक्षा का पूरा दायित्व अब श्री विजोतो टिनी पर था।



विजोतो आतंकियों पर फायरिंग कर रहे थे जिसके कवर में संतो देवी और अन्य साथी जवान घायल सुलतान सिंह और नन्द किशोर को एवेक्युएट कर के बाहर निकाल रहे थे।

इसके बावजूद धरमबीर आतंकियों की गोलियों की बौछार में घायल हो गए।











संतो देवी की सूझ-बूझ और बहादुरी ने बिना किसी क्षति के सभी श्रद्धालुओं को सुरक्षित परिसर से बाहर निकाल लिया था।



विजोतो टिनी के कुशल नेतृत्व और दिलेरी ने बिना किसी जान और माल की हानि के आतंकियों का खात्मा कर एक बहुत बड़ी दुर्घटना को टाल दिया जोकि एक भीषण साम्प्रदायिक आग का रूप लेकर पूरे देश के अमन चैन और आपसी भाईचारे को खाक कर सकती थी।

अलंकरण

सी.आर.पी.एफ. की 33वीं बटालियन के सभी जवानों द्वारा देश की धरोहर और आम नागरिकों की सुरक्षा हेतु किए गए इस साहसपूर्ण कृत्य के लिए श्री विजोतो टिनी एवं श्री धरमबीर सिंह को शौर्य चक्र से, श्रीमती संतो देवी, श्री नन्द किशोर, श्री सुल्तान सिंह, श्री सुरेन्द्र मोहन, श्री निर्मल चंद एवं श्री ओम प्रकाश को राष्ट्रपति के पुलिस पदक से तथा श्री योगिंदर सिंह, श्री खयाली राम, श्री ए. एस. अली, श्री गौरी शंकर, श्री समरजीत सिंह, श्री पिंजारी जहांगीर, श्री आर. टी. कोलेह, श्री जे.एन. सैकिया, श्री अर्जुन यादव, श्री रामाश्रय प्रसाद, श्री राजेश कुमार, तथा श्री जसविंदर सिंह को पुलिस पदक से सम्मानित किया गया!

शौर्य चक्र से सम्मानित



श्री विजोतो टिनी

तत्कालीन रैंक : सहायक कमाण्डेंट, वर्तमान रैंक: उप कमाण्डेंट



श्री धरमबीर सिंह

तत्कालीन रैंक: उप निरीक्षक, वर्तमान रैंक: निरीक्षक

राष्ट्रपति के पुलिस पदक से सम्मानित



श्रीमती संतो देवी

तत्कालीन रैंक : सहायक कामाण्डेंट, वर्तमान रैंक: उप कमाण्डेंट



श्री नंद किशोर

तत्कालीन रैंक : हवलदार, वर्तमान रैंक: उप निरीक्षक



श्री सुल्तान सिंह

तत्कालीन रैंक : हवलदार, वर्तमान रैंक: उप निरीक्षक



श्री निर्मल चंद

तत्कालीन रैंक : हवलदार, वर्तमान रैंक: निरीक्षक



श्री सुरेन्द्र मोहन

तत्कालीन रैंक : सिपाही, वर्तमान रैंक: हवलदार



श्री ओम प्रकाश

तत्कालीन रैंक : सिपाही, वर्तमान रैंक: हवलदार

पुलिस पदक से सम्मानित



श्री योगिन्दर सिंह

तत्कालीन रैंक : द्वितीय कमान अधिकारी, वर्तमान रैंक : द्वितीय कमान अधिकारी (सेवानिवृत्त)



श्री खयाली राम

तत्कालीन रैंक : हवलदार, वर्तमान रैंक : निरीक्षक



श्री राजेश कुमार

तत्कालीन रैंक : सिपाही, वर्तमान रैंक : निरीक्षक



श्री जसविन्दर सिंह

तत्कालीन रैंक : सिपाही, वर्तमान रैंक : उप निरीक्षक



श्री समरजीत सिंह

तत्कालीन रैंक : सिपाही, वर्तमान रैंक : सहायक उप निरीक्षक



श्री पिंजारी जहांगीर

तत्कालीन रैंक : सिपाही, वर्तमान रैंक : सहायक उप निरीक्षक



श्री आर.टी. कोलेह

तत्कालीन रैंक : सिपाही, वर्तमान रैंक : सहायक उप निरीक्षक



श्री जे.एन. सैकिया

तत्कालीन रैंक : सिपाही, वर्तमान रैंक : सहायक उप निरीक्षक



श्री अर्जुन यादव

तत्कालीन रैंक : सिपाही, वर्तमान रैंक : सहायक उप निरीक्षक



श्री गौरी शंकर

तत्कालीन रैंक : सिपाही, वर्तमान रैंक : हवलदार



श्री ए.एस. अली

तत्कालीन रैंक : सिपाही, वर्तमान रैंक : सहायक उप निरीक्षक



तत्कालीन राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम,
श्री विजोतो टिनी, सहायक कमाण्डेंट को शौर्य
चक्र से अलंकृत करते हुए।



तत्कालीन राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम,
श्री धरमबीर सिंह, उप निरीक्षक को शौर्य चक्र
से अलंकृत करते हुए।



सरदार पोस्ट एक शौर्य गाथा ।

9 अप्रैल को गुजरात के रण ऑफ कच्छ में वीरता साहस और रण कौशल की एक अद्वितीय मिसाल रची गई जब केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक छोटी सी टुकड़ी ने एक पूरी पाकिस्तानी ब्रिगेड को न केवल धूल चटा दी बल्कि उसे पराजित कर पीछे लौटने पर मजबूर कर दिया। दुनिया के युद्ध इतिहासों में दर्ज एक अनूठी शौर्य गाथा।



वीर भृगुनंदन

यह केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रथम कीर्ति चक्र प्राप्त करने वाले अमर शहीद भृगुनंदन चौधरी की वीरता, साहस, बलिदान और मित्र भाव की पराकाष्ठा की कहानी है। यह कहानी है उस जवान की जो बारूदी सुरंग में अपनी दोनों टांगें गंवा देने के बावजूद माओवादियों का सामना करता रहा। यह वह स्थिति थी जब माओवादियों के हमले में उसका पूरा दल बिखर गया था और उसके साथी सिपाही का भी दाहिना बाजू बारूदी सुरंग के विस्फोट में उड़ गया था। उस स्थिति में भी उसने न केवल माओवादियों के एक बहुत बड़े दल को रोके रखा बल्कि अपने घायल साथियों की भी मदद की।



शूरवीर प्रकाश

एक शौर्य चक्र और छः पुलिस वीरता पदकों से सम्मानित देश के सर्वाधिक अलंकृत पुलिस अधिकारी प्रकाश रंजन मिश्र के हैरत अंगेज कारनामों से भरपूर एक चित्रकथा। जानिए कैसे एक वीर अधिकारी ने एक गोली जांघ में, चार गोलियां दाहिने कंधे के नीचे सीने में और एक गोली कान को छील कर निकल जाने के बावजूद, माओवादियों के विरुद्ध एक बड़े अभियान को सफलतापूर्वक अंजाम दिया।



जाँबाज इलंगो

छत्तिसगढ़ के बीजापुर में माओवादियों पर काल बन कर टूट पड़े तमिलनाडू के एक साधारण ग्रामीण परिवार से आए श्री एस. इलंगो की शौर्य गाथा जिन्हें तीन वीरता पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के पुलिस उप-महानिरीक्षक श्री एस. इलंगो देश के उन दिलेर अधिकारियों में गिने जाते हैं जिन्होंने अपने साहस व सूझबूझ से देश में आतंकवादियों, माओवादियों और देशद्रोहियों के विरुद्ध कई बड़े अभियानों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है।

5 जुलाई, 2005 को अयोध्या स्थित विवादित स्थल पर अचानक खूंखार आतंकवादियों ने हमला कर दिया। आतंकी अपनी कुत्सित मंशाओं को पूरा करने के लिए खुद को अत्याधुनिक हथियारों से लैस करके आए थे। स्वचालित रायफलें, हथगोलों और रॉकेट लांचर्स से लैस आतंकवादियों को विवादित स्थल को ध्वस्त करने से रोकना किसी भी सुरक्षा बल के लिए एक दुष्कर कार्य हो सकता था, लेकिन उन आतंकवादियों और विवादित स्थल में मौजूद दर्शनार्थियों के बीच एक अभेद्य सुरक्षा दीवार बन कर खड़े हो गए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी.एफ.) की 33वीं बटालियन के 'डी' कंपनी के जवान, जिन्होंने ना केवल उन सभी आतंकवादियों को मार गिराया बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि विवादित स्थल और दर्शनार्थियों को लेश मात्र भी क्षति न पहुंचे!

